Ba-2nd year
Paper-3
Topic-Postulates of morality
Hindi
By-Dumrendra Rajan

संकल्प की स्वतंत्रता

- संकल्प की स्वतंत्रता **नैतिकता की आवश्यक मान्यता का तीसरा मापदंड है|**
- जब मनुष्य में इच्छा संघर्ष होता है तब वह उपलब्ध विकल्पों में से किसी एक को चुनने के लिए स्वतंत्र होता है |
- यह जो **चुनने की स्वतंत्रता है** इसी को हम संकल्प स्वतंत्रता के रूप में जानते हैं
- नीति शास्त्र में स्वतंत्र संकल्प का बहुत महत्व है यदि ऐसा नहीं होगा तो नैतिकता का कोई प्रश्न नहीं रह जायेगा|

संकल्प की स्वतंत्रता का परिस्थिति से संबंध

- यदि मनुष्य का कर्तव्य बाह्य परिस्थितियों से निर्धारित होगा तो उसका कर्म नैतिकता की परिधि में सटीक नहीं बैठेगा |
- क्योंकि उसका कर्तव्य बाह्य परिस्थितियों का दास होगा
- **ऐसे कर्तव्य जो बाह्य परिस्थितियों के कारण होते हैं हमारे नहीं चाहने से या चाहने से उनका कोई संबंध नहीं होता है|**

- यदि मनुष्य बाहरी परिस्थितियों के विरुद्ध कार्य नहीं कर सकता तो वह किसी निर्जीव पदार्थ जैसा ही होगा |
- एक निर्जीव पदार्थ के कर्तव्य नैतिकता के परिधि में नहीं आते हैं इसलिए **हेगल** ने कहा है **यंत्रवत विश्व में नैतिक भेदों का कोई महत्व नहीं रह जाता**
- अर्थात एक ऐसा विश्व की कल्पना की जाए जहां पर हर एक **कर्तव्य बाह्य परिस्थिति से निर्धारित होगी तो हम जो मनुष्य हैं वह घड़ी के समान होंगे और परिस्थिति घड़ी की चाबी के समान होगी**
- जब भी चाभी दिया जाएगा तो हम चलेंगे अर्थात हमारी स्वतंत्रता और **हमारे संकल्प का कोई महत्व नहीं रह जाएगा**

चरित्र और संकल्प की स्वतंत्रता

- संकल्प की स्वतंत्रता का मतलब यह नहीं है कि मनुष्य जो मन सो काम करें |
- उसका कर्तव्य भी चरित्र से नियंत्रित होता है और **मनुष्य का जो चरित्र है वह उसका खुद का है इसलिए चरित्र नियंत्रित कर्तव्य उसका खुद का कर्तव्य है इसे ही आत्म नियंत्रण भी कहा जाता है |**
- यही नैतिक जीवन का आधार है यही संकल्प की स्वतंत्रता है

अंतर्गत आता है और स्वच्छंदता कभी भी नैतिकता के मापदंड पर खरा नहीं उतरता है |

- जो कर्म हम अपने चरित्र से करते हैं और चरित्र हम अभ्यास बस पाते हैं |
- बुद्धि पूर्वक एवं चरित्र सम्मत हमने कोई निर्णय लिया हो वही कर्म सही है|
- जो नैतिक रूप से उचित होगा संकल्प की क्षमता का सही अर्थ यही है|

निष्कर्षत:

मारटेन्यू ने कहा है **“संकल्प की स्वतंत्रता या तो सत्य है या नैतिक निर्णय एक भ्रम’**

- **मनुष्य जो कर्तव्य करता है यदि वह अपने चरित्र तथा विवेक बुद्धि के द्वारा करता है है तो यह कर्तव्य उसका संकल्प की स्वतंत्रता का परिचायक है.**
- **.... संकल्प की क्षमता का विरोधी सिद्धांत नियतिवाद है**